हलदूण

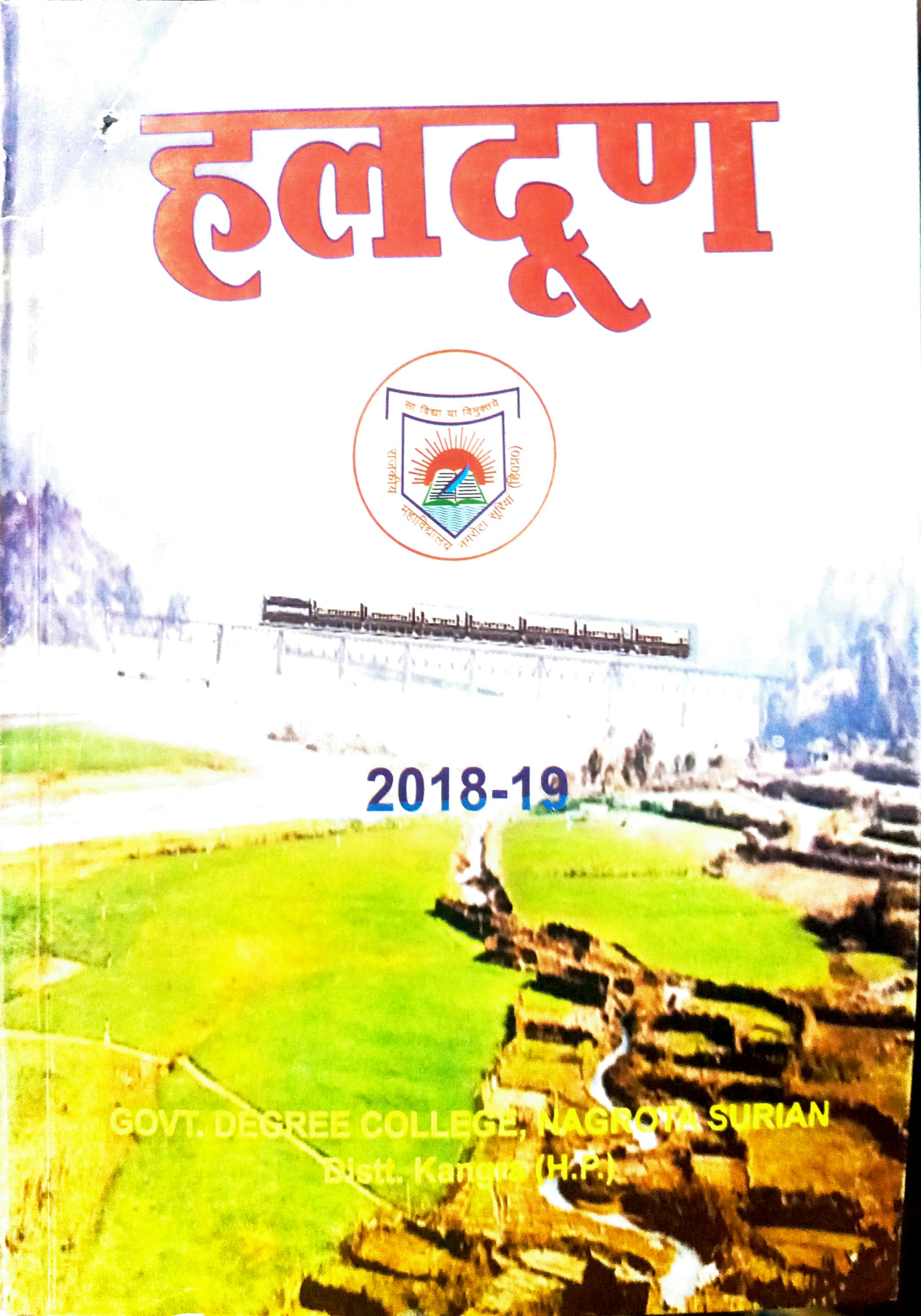

2018-19

GOVT. DEGREE COLLEGE, NAGROTA SURIAN

Distt. Kangra (H.P.)

पुरस्कार वितरन समारोह में मुख्यातिथि तथा पंडाल में बैठे अतिथिगन, अभिभावक व महाविद्यालय के छात्र व छात्राएं

पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्यातिथि श्री अर्जुन ठाकुर को स्मृति चिन्ह प्रदान करते महाविद्यालय के प्राचार्य व अन्य स्टाफ

प्राचार्य की कलम से

शिक्षा व्यक्ति का ऐसा आभूषण है, जो उसके आन्तरिक गुणों का विकास करके उसे सभ्य एवं सर्वगुण सम्पन्न बनाता है। शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित लोगों की तुलना में अधिक जागरुक,संवेदनशील एवं अधिक कार्यकुशल होता है। अतः प्रत्येक को शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए। शिक्षा ही मानव की उन्नति का मूल मन्त्र है। ज्ञान जहां व्यक्ति को उसके कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति सचेत करता है, वहीं समाज में सुरक्षा व सम्मान का आधार भी बनाता है। शिक्षण संस्थान इस ज्ञान प्राप्ति के स्त्रोत हैं। शिक्षण संस्थानों में दूसरे अर्थो में मानव निर्माण की कार्यशाला भी कहा जाता है। अन्य औधोगिक वर्कशाप में तो वस्तुओं का निर्माण होता है लेकिन शैक्षणिक वर्कशाप में 'मानव निर्माण' किया जाता है। मैं समझता हूं कि इस मानव निर्माण की कार्यशाला में आप जब तक रहें, इसके समस्त उपकरणों का सदुपयोग करें ताकि आपके व्यक्तित्व व चरित्र का उचित निर्माण हो सके और आप अच्छे नागरिक बनकर देश के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सकें।

मानव निर्माण व चिन्तन सृजन में एक उपकरण और अत्यन्त महत्वपूर्ण उपकरण कालेज की पत्रिका होती है जो नवसिखुओं को अपनी अल्हड़, अविकसित व अप्रस्फुटित भावनाओं को प्रस्फुटित व अंकुरित होने का अवसर प्रदान करती है। यह एक ऐसा मंच है जो स्वतन्त्र चिन्तन व मन माफिक भावनाओं के सृजन का अवसर देता है, इस समंच की सीढ़ी पाकर अल्हड़ भावनाएं परिपक्वता की ओर बढ़ती है। यश, मान कीर्ति, मनोरंजन धैर्यवर्धन व पहचान के स्वर यहीं से फूटने लगते हैं। अध्ययन के साथ, अध्ययन की प्रभावन्ति से उभरे मन के भावों का दौर है और पत्रिका, जो आपके छात्र जीवन के अनुभवों को संजोकर रखती है। भावनाओं को पुष्पित और पल्लवित करने वाले इस उपकरण का सभी विद्यार्थियों को उपयोग करना चाहिए ऐसी मेरी मशां और उम्मीद है।

डा0 एच0 एल0 धीमान

सम्पादकीय.....

हलदूण का नाम क्यों

हल व दूण दो शब्दों से निर्मित शब्द का अभिप्राय है हल के माध्यम से दोगुणा पैदावार अर्थात जिस क्षेत्र में हल की जोत से दो गुणा पैदावार होती रही हो उस क्षेत्र को हलदूण कहा गया। अंग्रेजी में इसका मतलब ग्रनरी भी है अर्थात अनाज का भवन। ब्यास नदी केपत्यका व ब्यास नदी की सहायक नदी दगज के साथ लगती धमेटा उपत्यका के बीच एक विशाल भू–भाग, लगभग 45 वर्ग कि. मी. के क्षेत्र में फैला है, जिसका अधिकांश हिस्सा समतलीय व नहरी था, अत्यधिक उपजाऊ था, यहां नमक और मिट्टी के तेल के सिवाय हर प्रकार के अन्न की पैदावार होती थी, उसे हलदूण कहा जाता था। रियांसती युग में प्रमुखतः गुलेर व डाडासिबा रियासत का यह भाग प्राकृतिक रुप से मालामाल था। स्वतन्त्रता से पूर्व ही ब्रिटिशों को इसके भूगोलिय स्वरुप पर आंख थी क्योंकि सिवा की ओर से पनप रही उपत्यका व दूसरी ओर धमेटा की ओर की उपत्यका का तलवाड़ा से दस कि. मी. ऊपर संगम पौंग गांव नामक स्थान पर इस ढंग से था कि वह स्थान संकरा हो गया था। ब्यास व गज इससे पहले ही सोथल नामक स्थान पर हाथ मिला चुकी थी, इसलिए बिजली वैज्ञानिकों की नजर में बांध निर्माण का यह उत्तम स्थल था। सन् 1926–27 में यहां पहला सर्वे हुआ। यह भी सर्वविदित है कि इसे उजाड़ने के पीछे राजस्थान की उस मीलों लम्बी मरु भूमि को उपजाऊ बनाने की मंशा थी, यहां पर किसी जमाने में प्रति कि. मी. जनसंख्या दर पांच व्यक्ति थी और कहीं कहीं तो एक व्यक्ति भी थी। स्वतन्त्रता के पश्चात व भाखड़ा ब्यास प्रबन्धक बोर्ड के उदयन से, साथ में भाखड़ा बांध के सफल कियान्वयन ने इस विचार को और अग्नि दी और सन् 1955 में भूभागीय सर्वेक्षण हुआ। 1961 में भारत के पहले मिट्टी से बने बांध का निर्माण शुरु होकर सन् 1974 में पूर्ण हुआ। समुद्र तल से 450 मीटर ऊंचाई पर बने इस बांध की अपस्ट्रीम लम्बाई 41 कि. मी. व चौड़ाई 2 कि. मी. है। इसके निर्माण से 150000 जनता विस्थापित हुई। डैम के भू तल से ऊंचाई 1430 फीट है। रिजर्वायर की लम्बाई 41 कि. मी. व चौड़ाई 19 कि. मी. है जिसमें छः बिजली के निर्माण की इकाईयां हैं जिसमें 600 मैगावाट बिजली पैदा होती है। इसे ब्यास डैम के नाम से भी जाना जाता है। तब बांध के कैचमैंण्ट क्षेत्र में 94 से अधिक गांवों की 75,000 एकड़ भूमि को भू–अधिग्रहण अधिनियम 1894 के तहत अधिकृत किया गया था। जिसमें नूरपुर व देहरा तहसील के 339 राजस्वी टीके शामिल थे। इनमें 223 तो पूर्णतः झील की परिधि में आ गए 116 टीके अंशतः इसकी जद में

आए। करीब यहां बसने वाले 30,000 परिवार प्रभावित हुए। विस्थापितों की भूमि का मुआवजा निर्धारण हेतु जमीन को आठ श्रेणियों में बांटा गया। 1962–63 की जमाबंदी के मुताबिक नहरी दो फसली श्रेणी का मुआवजा 140 रु0 प्रति कनाल निर्धारित किया गया जो बाद में 650 रु0 प्रति कनाल कर दिया। तब 9.7 कनाल को एक एकड़ आंका गया। सन् 1955 में भूगर्भी सर्वेक्षण हुआ, जो सन् 1974 के अन्त तक पूर्णतः मुकम्मल हो गया। आज यहां से 600 मैगावाट बिजली पैदा होती है। भारत की इस बहुउद्देशीय परियोजना से अब पंजाब, हरियाणा सहित राजस्थान को बिजली के साथ पानी मिलता है। राजस्थान की मरु भूमि को तो संजीवनी मिल गई है, वहां जनसंख्या घनत्व भी बढ़ गया है और हरियाली के साथ रिकार्ड पैदावार भी।

हलदूण की संस्कृति : संस्कृति से हमारा अभिप्राय मानव के रहन सहन, खान पान, आचार विचार व धर्म त्योहार आदि से है। हालांकि हर घर का अपना कल्चर होता है उसी तरह समुदाय विशेष का तथा उसी तर्ज पर क्षेत्र व अंचल विशेष, का भी अपना कल्चर होता है। कहा जाता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है। बताया जाता है कि जब सदियों पूर्व राजपूतों के गढ़ राजस्थान में जब मुगलों ने हमले किए तो बहुत से राजा व उनकी प्रजा पहाड़ो व वनों की ओर कूच कर गये थे। सदियों पहले मैदानी क्षेत्र से आये लोग इस हलदूण में बस गये थे। दरियाई क्षेत्र होने के कारण तब यह धरा सरकण्डो से भरी थी जिसमें सदियों पहले आबाद किया और यह हलदूण बनी जिसे बाद में 'हार्ट आफ कांगड़ा' कहा जाता था बाद में इन्हीं लोगो को मुरब्बों के रुप में राजस्थान की भूमि आबंटित हुई, कृषि व हलवाई जिनका पेशा था। हलदूण में भी अधिकांश कामगार लोग बसे थे जिनका मुख्य धन्धा कृषि था। हालांकि दसरे जातियों के लोग भी थे परन्तु समाज में वर्चस्व व रहनुमाई ही उनकी फितरत थी। इसलिए यहां मुख्य संस्कृति कृषि थी। कृषि से ही जीवन धारा आगे बढ़ती थी जिसमें जुड़ जाते थे हमारे रीती रिवाज व आचार विचार। इस कृषि कल्चर घाटी में 30,000 हजार परिवार डूब गए, जिसमें उनके अपने देवी देवता थे, अपनी–अपनी बस्तियां थी, पूजा स्थल थे, जीवन यापन व आचार व्यवहार, रिश्तेदारी, सगे सम्बन्धियों की संस्कृतिक विरासत थी, तथा उनकी आस्थाओं के प्रतीक मठ व मन्दिर, मस्जिदें, गुरुद्वारे सब पानी में डूब गये। अब समृतियां शेष हैं, नई पीढ़ी तो उससे भी अपरिचित है यहां बहुत सी सांस्कृतिक स्मृतियां झील बनने के साथ पानी में डूब गई, वहीं पुरानी पीढ़ी के गमन के साथ वची–खुची स्मृतियों की धरोहर पूर्णतः विसमृत हो जाएगी। जबकि हलदूण की आधी धरा को सींचने वाली गज खड से निकलने वाले 'रुल' कूहल अपने उन गीतों का इतिहास संजोय है। बताया जाता है कि राजाओं के जमाने में जब हलदूण को सींचने वाली रुल कूहल में पानी नहीं चढ रहा था तो तत्कालीन रियासती नरेश ने अपनी बड़ी बहू की बली देकर यहां बहू की कुर्बानी

दी थी और पानी से हलदूण मालामाल हुई थी। ऐसा सुना है कांगड़ा जनपद में विशेषकर इस घाटी में रानी की कुर्बानी का प्रसंग बड़े चाव से गाया जाता है। उसके बोल अब भी उस अतीत का स्मरण कराते हैं। गवैयों के मुख से उस हृदय विदारक घटना को सुनकर आज भी आखों में बरबस आंसू आ जाते हैं। पंजी दा मेला, महुए दा पीर, बल्ले दा पीर, बाथू की लड़ी, पंजराल का गुरुद्वारा, पंचवड़ का गुरुद्वारा व अन्य कई सांस्कृतिक स्थल व घटनाएं हैं जो अब झील में समा गई हैं।

हलदूण से विस्थापित अधिकांश जनता नूरपुर, ज्वाली व नगरोटा सूरियां पट्टी में बसी है। नगरोटा सूरियां पौंग झील की तलहटी है। सरकार द्वारा कालेज के रुप में नगरोटा सूरियां की जनता को एक बड़ी सौगात ही है। यह कालेज उन हलदूण वासियों की नूतन पीढ़ी व हलदूण की उजड़न से प्रभावित आस पास की जनता का मानसिक पोषण कर रहा है। इसलिए कालेज के मानसिक मंच अर्थात पत्रिका का नामकरण 'हलदूण' रखना उन हलदूण वासियों के लिए हमारी छोटी सी श्रद्धांजली है। शायद हलदूण नामक पत्रिका के पन्नों से हम उन लम्बे–लम्बे लहलहाते खेतों, सुदूर उड़ती कूंजों, चरते पशुओं, बहती कूल्हों, मन्दिर में बजती घंटियों, गुरुद्वारों में गूंजती गुरवाणी, मेहनती कृषकों को अपने स्मरण में संजो सकें। और नई पीढ़ी उस बलिदान का मोल जान सके, नामकरण के पीछे यही हमारी मंशा है।

डा0 एच0 एल0 धीमान

महाविधालय नगरोटा सूरियां की विकास यात्रा

दो हजारर चौरह में नगरोटा सूरियां में कालेज बनने से पहले यहां सिर्फ मांग थी चिरकालिक मांग , जायज मांगे जरुरतमन्दो की मांग इलाके के गरीब–गुरबों और विशेषकर बच्चियों की मांग। इसके लिए कोशिश जरुर हुई पर पूर्ति नहीं हुई। पूर्ति के लिए वर्ष 2012 में सरकार की शिक्षा निदेशक के माध्यम से एक चिठठी चली जिसमें राजकीय महाविधालय हरिपुर गूलेर के प्राचार्य को नगरोटा सूरियां में कालेज खोले जाने का सर्वेक्षण करने का निर्देश हुआ, इससे पहले भी देहरी व शाहपुर कालेजों के प्रिंसिपल ने भी सर्वे करके नगरोटा सूरियां में कालेज खोले जाने की सिफारिश कर चुके थे लेकिन रिपोर्ट धूल फांकती रही कालेज न खुल सका, देर तक यहां की जनता के अरमान धूल धूसित होते रहे। हर बार प्रदेश के मुख्यमन्त्रियों का दौरा निराश करता रहा, नगरोटा सूरियां अचल ने निराशा में जीना सीख लिया था। मगर यह निराशा वर्ष 2013 में तब आशा में बदल गई जब तत्काल मुख्यमन्त्री नें ज्वाली की रैली में मार्च 3, 2013 को नगरोटा सूरियां को कालेज खोलने की घोषणा कर न केवल पण्डाल की जनता को गद गद कर दिया अपितु नगरोटा सूरियां के प्रत्येक हितैषी के दिल में खुशी का आलम भर दिया।

यह वह घड़ी थी जब नगरोटा सूरियां का हर चहेता खुशी से झूम उठा था। घर से दूर बैठे मारभूमिपरस्तों में खुशी के फोन घनघनाने लग पड़े थे क्योंकि बरसों से पसरा निराशा का अन्धकार छटा था। नगरोटा सूरियां में कालेज खुलना एक बड़ी उपलब्धि थी, हरिपुर कालेज के प्राचार्य की 32टन्ठ की वह रिपोर्ट भी इस घोषणा में कारगर हुई जिसमें भूगोलीय, जनसांरियकीय व लोकतन्त्रीय दृष्टि से यहां कालेज खोलना जायज ठहराया था।

नगरोटा सूरियां ज्वाली विधानसभा की एक कोने में होने के कारण महत्वपूर्ण होते हुए भी बहुत बार महत्वहीन व अनदेखा रहा है, ऐसा यहां का जनमानस अनुभव करता है, इसलिए तकरीबन साल तक कालेज की घोषणा होने के वावजूद सरकारी अधिसूचना न होना यहां के जनमानस को संशय का शिकार बनाता रहा। यह संशय तब दूर हुआ जब हि0प्र0 सरकार ने 15 जनवरी 2014 को नगरोटा सूरियां में कालेज खोलना अधिसूचित कर दिया। नगरोटा सूरियां के साथ प्रदेश में 13 कालेज और खोले गए, नगरोटा सूरियां उनमें प्रथम था।

कालेज की अधिसूचना के होने के उपरान्त इसके कार्यभार का जिम्मा नजदीकी कालेज प्रिंसिंपल हरिपुर गुलेर को दिया था, जिनको जून 2014 से शैक्षिक सत्र का शुरुआत करनी थी। यह शुरुआत सर्वप्रथम कालेज भूमि को चिन्हित करना था व जून 2014 के सत्र का आरम्भ।

कालेज का आरम्भ करने के लिए सरकारी दिशा निर्देश पर रावमापाठशाला का ओल्ड सांईस ब्लाक चिन्हित किया गया। जहां से चिरकालिक, चिरलम्बित व चिरप्रतीक्षित मांग की पूर्ति के साथ नगरोटा सूरियां महाविधालय का श्रीगणेश हुआ। आरम्भ में 113 बच्चा ने कला संकाय में दाखिला लिया उनमें से नौ को सितम्बर में कामर्स में परिवर्तित कर वाणिज्य संकाय की भी शुरुआत कर दी इक्डोल के छात्र थी वाणिज्य संकाय में आ गए।

कालेज की प्रथम पी टी ए का गठन

कालेज की प्रथम पी टी ए मीटिंग जुलाई 26, 2014 को स्कूल के हाल में हुई जिसमें श्री सतपाल मैहरा अध्यक्ष मनोनीत हुए। इस पी टी ए ने कालेज के शुभारम्भ के लिए आम जनता से पैसे की उगराही की ताकि पुराने पड़े साईंस भवन का पुर्नहार किया जा सके। कुल 31000 रुपये जुड़े जिसमें एमपी फिलिंग स्थेशन के पवन कुमार ने 5000 रुपये दान दिए व मेहर सिंह पठानिया ने कालेज को साईनबोर्ड दान दिया।

कालेज का शुभारम्भ राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला नगरोटा सूरियां केपरिसर में हुआ जिसमें हमें स्कूल के ओल्ड साईंस ब्लाक की बिल्डिंग दी गई जो एक दम भूतनुमा थी। कक्षाओं का चलन यहां पर नहीं था, जिसमें एक लेबोरेटरी सहित तीन बड़े हाल कमरे थे उसी में कक्षाओं की शुरुआत हुई। भवन परिसर को सौंपने का प्रस्तावमई 20, 2014 को स्कूल पिंसिपल श्री शेर सिंह व कालेज प्राचार्य डा0 अशोक अवस्थी केसाथ वरिष्ठ प्रोफेसर डा0 हरबंस लाल धीमान की उपस्थिति में साइन हुआ। इस अवसर पर स्कूल के सदस्य भी उपस्थित थे।

साइट निरिक्षण कमेटी

कालेज की अधिसूचना हो जाने के उपरान्त सरकारी निर्देश पर प्राचार्य राजकीय महाविधालय हरिपुर ने कालेज के वरिष्ठ प्रवक्ता डा0 एम एल धीमान के नेतृत्व में साइट सैलेक्शन कमेटी का गठन किया। कमेटी ने खब्बल, वनतुंगली व बासा स्थित सरकारी भूमि का निरिक्षण कर सरकार को रिपोर्ट भेजी, तुंगली स्थित भूमि उचित तो थी परन्तु कालेज की भावी योजनाओं के अनूरुप कम थी, इसलिए वनतुगंली में साथ लगती वन भूमि को भी अधिग्रहण करने का निर्णय हुआ। सन 2014 में ही वन भूमि के अधिग्रहण की भूमिका तत्कालीन प्राचार्य एच एल धीमान द्वारा शुरु कर दी गई।

कालेज भवन का शिलान्यास

वन तुंगली में 50 कनाल भूमि तह हो जाने व शिक्षा विभाग के नाम हस्तान्तरित हो जाने के पश्चात कालेज के भवन का शिलान्यास प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह द्वारा 17 फरवरी 2015 को किया गया जिसमें सीनीय नेताओं के अलावा शिक्षा विभाग व लो नि वि के उच्च अधिकारी भी उपस्थित थे।

कालेज का प्रथम पुरस्कार वितरण समारोह

कालेज का प्रथम पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 2016 को सम्पन हुआ। जिसमें तत्काल मुख्य संसदीय सचिव ; शिक्षाद्ध श्री नीरज भारती थे। कालेज का दूसरा पुरस्कार वितरण समारोह 28 फरवरी 2018 को मुख्यातिथि श्री अर्जुन सिंह माननीय विधायक ज्वाली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कालेज में साईंस कक्षाओं का आरम्भ

अपने भवन से शिफट न करने व जगह की कमी होने के बावजूद सरकार ने विधार्थियों व स्टाफ की मांग पर ,मैडीकल व नान मैडीकलद्ध में 2017 में साईंस कक्षाएं शुरु कर दी जिसमें 108 बच्चों ने प्रवेश लिया।

मई 2018 से कालेज में BBA/BCA कक्षाऐं चलाने की अनुमति भी मिल गई है।

GNOU का अध्ययन केन्द्र खोलना क्षेत्रीय निदेशक इग्नो शिमला के पास विचाराधीन है।

Haldoon

ENGLISH SECTION

Session 2018-19

Staff Editor
Nishant

Student Editor
Deeksha Samkaria &
Monika Thakur

Student Editorial

Dear friends

I feel immensely proud in presenting this issue of the English Section of "Haldoon" the prestigious college magazine. Magazine is a medium which encourages students to highlight their hidden talent. It also provide a platform to the students to express their inner views openly and independently. This overall development of the personality of a student depends upon his or her skills and this magazine helps to enhance the skill of writting. This edition of magazine also helps the students to develop self confidence among themselves.

The college magazine "Haldoon" is full of interesting and informative articles. I pay my sincere thanks to the staff Editor (English Section) "Mr. Nishant" for his support and guidance.

"Happy Reading"

Deeksha Samkaria
BA IVth Semester
Roll No. : 802

FOR A HAPPY LIFE

Believe in yourself always
But don't be overconfident,
Be satisfied,
But know that you can always improve.
Accept love graciously,
And always be being, to give more.
Be modest in victory and success,
And courageous in defeat.
Give comfort and security to others,
And you will always receive it in return,
Be glad... Just for being the wonderful
Person that you are

Sudha Rani
Class - BA 5th Sem
Roll No 604

SCHOOL LIFE

Most irritating moments,
Morning alarm.
Most difficult task,
To find socks.
Most dreadful journey,
Way to class.
Most lovely time,
Meeting friends.
Most tragic moments,
Surprise test in ist period.
Most wonderful news,
Teacher is absent

Pankaj
Class - Bsc IInd Sem
Roll No .....

My Love My Mom.....

You are the sunlight in my day.
You are the moon I see far away.
You are the one that makes troubles be gone.
You are the one who taught me life,
How not to fight, for what is right
You are the words in my songs,
You are my love, my life , my mom.
You are the one who care for me
You are the eyes that help me see.
You are the one who knows me the best
When it's time to have fun and time to reset
Afraid of life but looking for love.
You are my friend, my heart, any my soul
You are the greatest friend I know
You are the words inside my song
You are my love, my life my mom
In short you are my everything
Love you Mommy.

Aamshi
Class - Bsc Ist Sem
Roll No 171308

AMAZING FACTS

Dolphins Sleep with one eye open.
A Cat has 32 muscles in each ear
Our eyes remain the some size pam birth onward,
but our nose and ears never stop growing.
The mona liso has no eyebrows.
The Barbie doll's full name is barbara Millicent
Roberts, Ants never sleep.
When the moon is directly overhead, you will weigh slightly less.
An astrich eyes is bigger than its brain,
I am is the shortest complete sentence in the English Language.
Babies are born without knee capsactually, they're made of
cartilages and the bone hardens between the ages of
2 and 6 years.
Butterflies taste with their feel.
It is imposible to sheeze with your open eyes.
Elephants are the only animals that can not jump.
The names of all the continents and with same letter that they start
with sample ways to save wildlife for urban people.

Simran
Class - Bsc IInd Sem
Roll No.....

THE GOD NEVER DIES

The magician called Sachim Ramesh Tendulkar today ensured that it was a farewell that each and every Indian will remember for posterity as the country 's greatest sporting icon walked in to thesunset with a knock which exhibited just why he is the greatest of this area. In his 200th and Test match Tendulkar showed how a genius 69 cup overwhelming emotions under control as he scored a majestic 74 in what will probably be his last international for the uninitiuted but for those who loved the man for the last 24 years each and every stroke that come out from that blade was a celeberation. These 74 come off 118 balls with 12 boundaries. A deft late cot off shane. Shilling ford, straight drive post. Tino Best a shot off his hips of shanon Gabiral, it was India's most loved hero's way of saying 'Thank you' as he completed today. The cobwds were off his mind 40,000 odd at the wankhede and the millions in every look and corwr of India may have felt the pressure , but the man himself had a sage like presence at the crease. Nothing mattered to him apart from the bowler and the release of his delivery. If cricket is a Religion Then Sachin is God. Today's innings was a vintage Tendulkar who made everyone sitona 'Time Machine' as he rolled back those years what no bowler has done success fully in 24 years, Tino Best was trying to do slodge Tendulkar but prodictably it didn't have an effect best tried to intimidte Tendulkar with short pitched deliveries. As Tendulkar a knowledyed the standing ovation he didn't know whether he had a tear in his eyes but there were most eyes at around as the revered Indian truly and we are enjoying his cricket. He doesn't have to prove any thing he 'll enjoy the game and hase your dreams and dreams do come truth such Sachin Tendulkar,s last match has been as emotion pached event for Indian,s. But even as the master Blaster took above before chaerivy crowds the all but continued

Sarbjot
Class - Bsc IInd Sem
Roll No .....

TO MOTHER

Is it too late to say 'I love you'?
The golden words I couldn't say for two decades
Now, when my own little girl is to me as I was to
both a pleasure and a pain
all the times I accused you of being heartless,
for leaving me in a boarding school
where no one cared.
And I thought you couldn't care either.
It was years later I learnt
That all the times when you left me alone
you just waited to be out of my sight,
to let those tears flow and the anguish to show
the brave face you put for me washed with necked pain
All the times I needed you,
yopu were there , measels, toothache, heart ache, child birth and all
You were there with a smile
But oh ! Those years of my stupid blindness !
Now I see my not so little girl do the same
and I think of all the pleasure and pain
but how I love her
just the way you loved me, love me still.
Mother dearest is it too late to say
'I love you'

Sunita
Class - BA IIIrd Sem
Roll No 16608

NATURE GREEN

Green is the nature
it has many features
it provides us food to eat,
and people are destroying nature,
without thinking of their future.
Trees give us oxygen,
but we are cutting them.
For our betterment,
we are destroying nature.
People are causing
different type of pollution.
They are not having
any other solution.
Please do not destroy nature,
its our future
its our future.

Be careful

Be careful of your thoughts because your thoughts become your words.

Be careful of your words because your words become your action.

Be careful of your action because your actions become your habits.

Be careful of your habits because your habits become your character.

Be careful of your character because your character becomes your destiny.

Mukesh
Class - Bcom Ist Sem
Roll No 17742

LUCK

She worked by day,
and toiled by night,
She gave up play,
and some delight.

Dry books she read,
New things to learn,
And forget ahead,
Success to earth.

She plodded on with,
Faith and pluck,
And who see won,
People called her luck.

Shweta Dhiman
BA IVth Semester (Arts)
Roll No. :

THOUGHTS

Your personality is known by the company you keep.
Your face is the mirror of your brain and heart.
Pains, tears and a little smile are three faces of life.
Rome was not built in a day.
Time is soul of the world.
Don't wprry but think.
Satisfaction is a real happiness.
Life is best lived by these who accept sorrows as its joy.
Dream is nesessary for a dream work.

Diksha
B.sc Ist Semester
Roll No. : 171311

A LETTER TO GOD

There was a poor farmer named Gangu. He worked hard in his field, but he had firm faith in God also.

One season Gangu's crop was destroyed by hailstorm. Gangu wrote a letter to God asking him to send him money.

The local postmaster saw Gangu's letter and was much impressed by Gangu's faith in God. The postmaster decided to help Gangu and collected some money for him. He put the money in an envelop.

When Gangu came to the post office to check his mail, the letter was delivered to him . Gangu opened the envelop and counted the money. He found that it was less than what he had asked for. He was very angry. He thought that the post office people had taken out the money.

Gangu wrote another letter to God to send him the rest of the money. But he asked God not to send the money through the mail because according to him the post office people were a Bunch of crooks. We laugh to see how simple Gangu is.

Preeti
B.sc Ist Semester
Roll No. : 171201

GOD HABITS

God is dear
but it is source of fear
Diamonds are costly
but they are stolen mostly
Silver shines well
But it makes our mind well
Your habits are jewels.

Develop them very well
Good habits make you great
bad habits you should hate
To develop good habits
begin with its never too late

Pallavi
BA IVth Semester
Roll No. : 16402

LIFE

Life is a challenge	Meet it
Life is a God gift	Accept it
Life is a adventure	Dare it
Life is a Sorrow	Overcome it
Life is a tragedy	Face it
Life is a duty	Perform it
Life is a game	Play it
Life is a song	Sing it
Life is a journey	Commute it
Life is a promise	Fulfil it
Life is beauty	Praise it
Life is a struggle	Fight it
Life is a puzzle	Solve it
Life is a goal	Achieve it

Abhilash
B.com IInd Semester
Roll No. :

" YOU CAN"

If you think you're beaten, you are.....
If you think you dare not you don't.....
If you like to win..... but think you can't.....
Its almost a cinch, YOU WON'T !!
If you think you"ll lose, you're lost .....
For out in the world you'll find.....
Success begins with a fellow's will.....
It's all in a state of mind.
If you think you're outclassed, you are.....
You've got to think high to rise.....
You've got to be sure of yourself before.....
You can ever win the prize
Life's battles don't always go.....
To the stronger or faster man.....
But sooner or later the one who wins.....
IS THE WON WHO THINKS HE CAN !!!

Rozzy
BA VIth Semester
Roll No. : 801

GOOD THINGS

I once heard an old man say,
Shaping vases out of clay
Into subile forms sublime.
"Listen, son, good things take time."
All of my life I've thought of this
When a task was lacking bliss,
When the work seemed awfully though
And I thought I'd had enough.
So I'd give a little more
To what sometimes seemed a chore,
And, you know, without a doubt,
Good things always come about.

Deeksha Samkaria
BA VIth Semester
Roll No. : 802

Try Try again

'Tis a lesson you should head,
If at first you don't suceed,
Try, Try again;
Then your courage should appear,
For if you will persevere,
You will conquer, never fear
Try, Try again;
If we strive, tis no disgrace
Though, we do not win the race;
What should you do in the case?
Try, Try again;
If you find your task in hard,
Time will bring you your reward,
Try, Try again;
All that other folks can do,
Why, with patience, should not you?
Only keep this rule in view;
Try, Try again;

Archana
BA VIth Semester
Roll No. : 803

COLLEGE DAYS

Making friends and memories
that will last forever in my mind.
learning the lessons that will mold
me into the person I will find
Discovering the possibility of
choice that I will need to make.
Wondering about the challanges
that lie on whatever path I take.
Listening to my heart, I set a course
for the goals I wish to achieve
And now I begin the journey of my,
knowing that all I need is to believe.

Minakshi Guleria
BA VIth Semester
Roll No. : 805

NATURE

Oh ! How beautiful is nature !
With flowers and birds,
And with thinking stars,
They shine and shine.

Nature's beauty can not be explained,
It is so beautiful,
And so amazing,
And is filled with joy.

How amazing is God's creation !
With chirping birds,
And colourful flowers and butterflies,
They spread happiness.

With fruits and berries,
And different creature,

How beautiful is nature !
How beautiful is nature !

Thank you O' God,
For you blessing,

Thank you for everything,
O' my Lord.

Nisha Katoch
BA VIth Semester
Roll No. :

THE SOUND OF SILENCE

In restless dreams I walk alone
Narrow streets of cofflestone,
' Neath the halo of a street lamp,
I turned my collar to the cold and damp.
When my eyes were stabbed
by the flash of neon light,
That split the night
And touched the sound of silence

And in the naked light I saw
Ten thousand people, may be more.
People talking without speaking,
People hearing without listening,
People writing songs that voices never
share and no one dared.
Disturb the sound of silence.

Shikha Pathania
BA VIth Semester
Roll No. : 414

COLLEGE LIFE

L - Life has playful destiny
I - In the world of study
N - No one can control
O - On the top of the ball

A - All written by the Lord
Q - Quitting is not solution
U - Unless there's no reason
I - In every little things
N - Now value for the dreams.

A - All the papers were used
R - Real student still confused
I - I don't know if I' ll go
E - Every directions of river's flow
L - Leaving in this world.

Monika Jamwal
BA VIth Semester
Roll No. : 413

GOD MADE TEACHERS

Good understood our thirst for
Knowledge, And our need to be led
by some one wiser;

He needed a heart of compassion,
of encouragement, and patience;
Some one who would accept
The challenge regardless of the
Opposition;

Someone who could see potential
And believe in the others.....
So he made teachers.

Neha Jamwal
BA VIth Semester
Roll No. : 416

NO MAN IS AN ISLAND

No man is an island,
Entire of itself,

Everyman is a piece of the continent,
A part of the main.

If a clob be washed away by the sea,
Europe is the less.

As well as if a promontory were,
As well as if a manor of the friend's

Or of thine own were.
Any man's death disminishes me,

Because I am involved in mankind,
And therefore never send to know

For whom the bell tolls;
it tolls for thee.

Priyanka
BA VIth Semester
Roll No.

हलदूण

हिन्दी
अनुभाग
सत्र 2018–19

प्राध्यापक सम्पादक
एच.एल. धीमान

छात्र सम्पादिक
कोनिका ठाकुर

सम्पादक छात्रा की कलम से.....

कालेज की दूसरी पत्रिका में विद्यार्थियों का स्वागत है। यह वह प्रवेश द्वार है यहां से विद्यार्थियों को सोचने का अवसर प्राप्त होता है।

2. **पत्रिका के उद्देश्य** :–
पत्रिका के उद्देश्य यह है कि सभी विद्यार्थियों को चिन्तन करने का अवसर मिले। यहां तक सम्भव हो सके। रचना/विषय स्वरचित होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों की सोचने की क्षमता का विकास हो। पत्रिका का यही उद्देश्य होता है।

3. **सृजनशीलता** :–
सृजनशीलता का अर्थ है सृजन करना अर्थात जो भी रचना विद्यार्थी पत्रिका में छपवाना चाहता है उसका सृजन वह स्वयं करें, न कि किसी अन्य की रचना को पत्रिका में छाप दें।

4. **पत्रिका एक मंच** :–
पत्रिका एक मंच है जिसके माध्यम से किसी भी विद्यार्थी को अपने विचार, अपना योजना अपने सुझाव, अर्थात अपने सिद्धांतो को पत्रिका में प्रकाशित करने का अवसर मिलता है। पत्रिका वह माध्यम बन जाती है जिससे उनके सुझाव अन्य विद्यार्थियों तक पहुंच जाते हैं। और विद्यार्थियों को पत्रिका के मंच को प्रयोग करने का अवसर मिल जाता है।

5. **पत्रिका में रचनाओं की अपेक्षा** :–
पत्रिका में रचना की अपेक्षा सदा यही रहती है कि जब भी पत्रिका में किसी रचना का उल्लेख किया जाता है तो इसमें विद्यार्थी द्वारा स्वरचित कविता/रचना हो जिससे पत्रिका में कुछ नयापन हो। सभी विद्यार्थियों से यही उपेक्षा की जाती है कि वह किसी अन्य की रचना का प्रकाशन अपनी पत्रिका में न करें।

6. **मन भावनाओं का विश्लेषण हो** :–
पत्रिका ऐसी होनी चाहिए जिसमें विद्यार्थी के मन की भावनाएं हों और पत्रिका के माध्यम से वह शब्दों से पत्रिका में जुड़ जाए। जिससे उनके मन की भावनाओं का विश्लेषण होगा और वह एक प्रस्तुति के रूप में बाहर आ जाएगी।

धन्यवाद

कोनिका ठाकुर
बी० ए० तृतीय वर्ष

जरा आहिस्ता चल ए जिन्दगी

1. जरा आहिस्ता चल ए जिन्दगी, कुछ लम्हे जीने बाकी हैं,
   कुछ अफसाने कहने बाकी हैं, कुछ यादें बताना बाकी हैं।
2. आहिस्ता चल ए जिन्दगी, College Life जीना बाकी है
   अरमान बचे अभी काफी हैं, करेंगे कुछ ना कुछ जिन्दगी में,
   इन पलों को जीना अभी बाकी हैं।
3. आहिस्ता चल ए जिन्दगी, अखिल की गूढ़ बातें समझना बाकी हैं
   पुनीत को बनाना साकी है, विशाल को Army की वर्दी में देखना है,
   अविनाश को अरमानों के खुले आसमान में भेजना है।
4. सन्नी, पंकू से दोस्ती अभी अधूरी है,
   गौरव की modeling की मंजिल से अभी दूरी है,
   आदर्श, शुभम मंचूरियन खाना भी जरुरी है,
   प्रीती से अभी बातें हुई नहीं पूरी हैं।
   आहिस्ता चल.....
5. कनिका, वरुण की गायिकी के मजे लेने हैं
   सूरज को zero figure बनाने के नुस्खे देने हैं,
   लक्ष्य के साथ Thar में हिमाचल घूमना है,
   आसमां को इरादों से चूमना है।
   आहिस्ता.....
6. यशपाल को जिन्दगी से रुवरु करवाना हैं,
   अरविन्द को जिन्दादिल बनाना है,
   इन दोनो के साथ एक बार फिर से, Youth festival में जाना है
   आहिस्ता चल.....
7. एक बार फिर से गेयटी थियेटर में हुनर दिखाना है,
   महाविधालय को प्रतिष्ठित करवाना है,
   Stage पर एक बार Dance करना है,
   एक बार दोस्तों को घर पर इकठ्ठा करना है
   आहिस्ता चल.....

8. MJS क साथ मस्तियां बाकी हैं
हरसर गैंग की हसितयां जानना बाकी हैं,
नन्दपुर वालों की जुबान खुलवानी है,
Avinash की Love Story अंजाम तक पंहुचानी हैं।

9. मोना की नादानियां बाकी हैं, शिखा की बचकानियां बाकी हैं
मीनाक्षी को बेफिक्र रहना सिखाना है,
नेहा को सेहत बनाने का मंत्र बताना है
रोजी और दाशी को English का Prof. बनाना है
आहिस्ता चल.....

10. Dishv को जिन्दगी से प्यार करना सिखाना है
Rozy के नाम के पीछे Dr. लगवाना है
इन दानों के साथ एक बार Adventure tour पे ले जाना है।
आहिस्ता चल.....

11. हरसर गैंग से एकता सीखनी है, Eco वालों से सहनशीलता सीखनी है
सिर्फ नाम की भाभी नहीं.....
निशा से बर्तन वाली रिश्तेदारी निभानी है।
आहिस्ता चल.....

12. फिर से CSCA function Organise करवाना है
Sai Palace का कमरा फिर से बुक करवाना है
बड़े खुश रहे हैं Sunny, Avinash जो इस खेल में कच्चे हैं
कैसे खत्म करुं हाथ में बचे बहुत पत्ते हैं।
आहिस्ता चल.....

13. Puneet को Rajeev Sir ने Exam form लेने बुलाया है,
Vishal जा यार बरामदे में बैठी लड़कियों ने तुझे बुलाया है।
Yashpal किकेट खेलने के लिए Sirmour से गेंद लाया है
Sunny कह रहा है Bike की चाबी दे निशू मझे Bathroom आया है
आहिस्ता चल.....

14. अभी गुप्ते के बर्गर खाने हैं
लड़कियों ने KT भाई से लंहगे बुक करवाने है
अगली बार Singing Youth festival में
बच्चे proper dress में लेके जाने हैं
आहिस्ता चल.....

15. Fancer की Car फिर से बाथू की लड़ी पहुंचानी है
Sunny को ढंग से Bike चलानी सिखानी है।
Akhil, Puneet नया बहाना सोचो
History की class 5 mint लेट लगवानी है।
आहिस्ता चल.....

16. आज शाम ट्रेन 3:15 आने वाली है
खड़े होके जाना पड़ेगा सीट कहां मिलने वाली है।
क्या करुंगा इतनी देर
लगता है आज crossing हरसर में होने वाली है।
आहिस्ता चल.....

17. Pol. Science की बसें अभी बाकी है
Narender Sir से बातें करनी अभी काफी हैं
यशपाल यार बुला जरुर लेना
Sir की शादी में डालनी नाटी है
आहिस्ता चल.....

18. College के नए भवन में जीना है
NSS camp फिर से लगवाना है
एक बार फिर से Tour पे जाना है
Pong Valley बस में धमाल मचाना है।
आहिस्ता चल.....

19. हिन्दी की class में प्यार मोहब्बत के किस्से सुनने हैं
धीमान Sir कहे अनुसार जिन्दगी के ताने बाने बुनने हैं।
Sir ने अभी mind set change करवाना है
कल ही नया लिया है एक बार class में face wash लगाके जाना है
आहिस्ता चल.....

20. Monika Mam ने पहाड़ी section का Editor बनाना है
Nishant Sir ने Red Ribbon की conf. में बुलाया है
Vipan Sir ने Historical club शुरु करने का मन बनाया है
समय बड़ी जल्दी बीता
नीशू अभी हर्षा मैम और पटेल Sir को नहीं समझ पाया है।
आहिस्ता चल.....

21. Rajesh Sir से एक कोरी कागज लानी है
Kulbushan Sir से fine की slip कटवानी है।
आंटी जी चीनी पत्ती दे दो
आज staff room में चाय बनानी है।
आहिस्ता चल.....

22. अभी एक साल बिताया है,
निशू अभी पूरी खुशियां नहीं दे पाया है
ए मेरी कलम रुक रुक के चल
तेरी नोक के नीचे उसका नाम आया है।
आहिस्ता चल.....

23. बहुत कुछ सीखा, बहुत कुछ सिखाया,
अध्यापकों ने विचार और नजरिया बदला
यारों ने जीना सिखाया
एक हारे हुए इन्सान को नगरोटा सूरियां महाविधालय में
जिन्दगी का लक्ष्य समझ आया
ए वक्त तू यहीं ठहर जा, जाने का वक्त आया है
आना जाना असूल है जिन्दगी का इसको कौन बदल पाया है।
कर्जदार रहेगा निशान्त परमात्मा, गुरुओं, माता पिता और दोस्तों का
जिन्होने इतना लिखने और मंच पर बोलने के काबिल बनाया।

निशान्त चौधरी
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 — 501

खुष हूं

जिन्दगी हौ छोटी हर पल में खुश हूं,
काम में खुश हूं आराम में खुश हूं,
कोई नाराज है तो इसके इस अन्दाज में खुश हूं,
जिसे देख नहीं सकती उसकी आवाज सुनकर खुश हूं।

जिसे पा नहीं सकती उसके बारे में सोच कर खुश हूं।
बीता कल जा चुका है उसकी मीठी याद में खुश हूं।
आने वाले कल का पता नहीं, इन्तजार में खुश हूं।
हंसता हुआ बीत रहा है पल , आज मैं खुश हूं।
जिन्दगी है छोटी वर्तमान में खुश हूं।

दीक्षा
बी0 एस सी तृतीय सैमेस्टर
रोल न0 – 171311

गिरना भी अच्छा है

गिरना भी अच्छा है औकात का पता चलता है.....
जब हाथ उठाने को अपनो का पता चलता है.....
जिन्हें गुस्सा आता है वो लोग सच्चे होते हैं
मैंने झूठों को अक्सर मुस्कराते हुए देखा है
सीख रहा हूं मैं भी मनुष्यों को पढ़ने का हुनर सुना है
चेहरे पे..... किताबों से ज्यादा लिखा होता है।
जमीन जल चुकी है आसमान बाकी है,
सूखे कुंए तुम्हारा इम्तहान बाकी है,
बरस जाना इस बार वक्त पर है मंघा,
किसी का मकान गिरवी है, किसी की लगान बाकी है

विशाल राणा
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 – 633

गिरना भी अच्छा है

आप सजग हैं.....जब आप निराशा में आशा की किरण जगाते हैं।
आप सतशील हैं.....जब आप स्वीकार करते हैं कि मुझसे यह गलती हुई है।
आप प्रगतिशील हैं.....जब आप अपने लक्ष्य की ओर उसे पाने के लक्षण में कम अन्तर पाते हैं।
आप दयाशील हैं ..... जब आप दसरों की भूलों को भूल जाते हैं।
आप विचारशील हैं..... आप चिन्ता को छोड़कर नित्य शुभ चिन्तन करते हैं।
आप शक्तिशाली हैं.....जब आप हर परिस्थिति में अचल रह सदा मुस्कराते हैं।
आप सम्माननीय हैं ..... जब आप दूसरों के सम्मान में ही अपना सम्मान समझते हैं।
आप प्रेमस्वरुप हैं ..... जब आप अपने दुःख को भूल औरों को खुशी बांटतें हैं।
आप उदारचित हैं ..... जब आप अपनी खुशी का इजहार दूसरों को बांट सकते हैं।
आप विनम्र हैं ..... जब अपने आप को पता न हो कि मैं कितना नम्रचित हूं।
आप बुद्धिमान हैं ..... जब आप अपनी कमियों को जान उन्हे दूर करने का प्रयास करतें हैं।
आप सौदंर्यवान हैं ..... जब आप स्वयं को सदा अपने मन रुपी दर्पण में ही देखते हैं।

सन्नी सिंह
बी0 काम तृतीय सैमेस्टर
रोल न0 – 17739

प्रार्थना जो सुन ली गई

1. मैंने भगवान से मांगी शक्ति,
   उसने दी मुझे कठिनाइयां,
   हिम्मत बढ़ाने के लिए।
2. मैंने भगवान से मांगी बुद्धि,
   उसने मुझे दी उलझने,
   सुलझाने के लिए!
3. मैंने भगवान से मांगा वरदान,
   उसने दिए मुझे अवसर,
   उन्हें प्राप्त करने के लिए।
4. मैंने भगवान से मांगी हिम्मत,
   उसने मुझे दी परेशानियां,
   ऊपर उठने के लिए।
5. वो मुझे नहीं मिला,
   जो मैंने मांगा था,
   मुझे वो मिल गया,
   जो मुझे चाहिए था।

लक्ष्य
बी0 ए0 चतुर्थ सैमेस्टर
रोल न0 – 16334

राह देखी थी इस दिन की कब से आगे के सपने सजा रखे थे ना जाने कब से बड़े उतावले थे यहां से जाने को – जिन्दगी का अगला पड़ाव पाने को
पर ना जाने क्यों दिल में आज कुछ और आता है वक्त को रोकने का जी चाहता है।
जिन बातों को लेकर रोते थे आज उन पर हंसी आती है ना जाने आज उन पलों की याद बहुत आती है।
कहां कटते थे बड़ी मश्किल से तीन साल सह गए पर आज क्यों लगता है कि कुछ पीछे रह गया।
पा भूलने वाली कुछ यादें रह गई यादें अब जो जीने का सहारा बन गई।
कौन मुझे मेरी काबलियत पर भरोसा दिलाएगा और ज्यादा पढ़ने पर भी मुझे आंखे दिखएगा।
मेरी खुशी में सच में खुश कौन होगा मेरे गम में मुझसे दुःखी कौन होगा
कह दो दोस्तों से कब होगा दोबारा।

रोजी
सैमेस्टर
रोल न0 – 801

कुछ का नाम बिगाड़ा कुछ की मौज उड़ाई दोस्त के जन्म दिन
पर उसे लातों से मारने पर भी दावत उड़ाई
मतभेद जो भी बढ़ गए खुद ही समझाते थे
एक दूजे से घुलमिल, माहौल को मस्त बनाते थे।
इग्जाम समय आने पर खुद को रात-रात जगाया था,
समझ नहीं आने पर 'मुझे पढ़ा दे' का नारा खूब लगाया था।
ये मौज मस्ती की जिन्दगी फिर ना कभी आएंगे,
तीन बरस जीवन के ये सबसे सुखमय कहलाएगें।
बीवी है बच्चे होंगे उनको खूब बताएगें
जो काटे यारों के साथ लड्डे उन्हे कहानियां बनाकर सुनाएगें।
तीन वर्ष जीवन के साथियों कभी ना वापिस आएगें।

अविनाश
सैमेस्टर
रोल न0 – 634

शीर्षक – बेटा, बेटी

बेटा तन है	–	बेटी मन है
बेटा वंश है	–	बेटी अंश है
बेटा आन है	–	बेटी शान है
बेटा मान है	–	बेटी गुमान है
बेटा वारिस है	–	बेटी पारिस है
बेटा संस्कार है	–	बेटी संस्कृति है
बेटा भाग्य है	–	बेटी विधाता है
बेटा दवा है	–	बेटी दुआ है
बेटा शब्द है	–	बेटी अर्थ है
बेटा राग है	–	बेटी बाग है
बेटा गीत है	–	बेटी संगीत है
बेटा प्रेम है	–	बेटी पूजा है।

अखिल, अक्षत गुलेरिया
बी0 ए0 बी0 काम छठा सैमेस्टर

हिन्दी कविता

बेटी

जब जन्म लेती है बेटी
खुशियां साथ लाती है बेटी
ईश्वर की सौगात ही बेटी
सुबह की पहली किरण है बेटी
तारों की शीतल छाया है बेटी
आंगन की चिड़िया है बेटी
त्याग और समर्पण है बेटी
नये–नये रिश्ते बनाती है बेटी
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी
बार–बार याद आती है बेटी
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास बेटी नहीं होती।

अखिल कुमार
बी0 ए0 फाइनल
रोल न0 – 530

शायरी

आंसुओं ने किसकी मानी
ये तो आंखो से निकली धारा है
खुशियों में छलके तो मोती हैं
दुःख में ये सहारा है।

सूरज शर्मा
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 – 405

आपकी राजदुलारी बिटिया

प्यारे पापा -
''बेटी'' बनकर आई हूं मां बाप की जीवन में
बेसहारा होगा मेरा कल किसी और आंगन में.....
क्यू यह रीत रब ने बनाई होगी
कहते हैं आज नहीं कल बेटी ''पराई'' होगी.....
देके ''जन्म'' पाल पोसकर जिसने हमें ''विदा'' किया
टूट कर बिखर जाती है हमारी ''जिन्दगी'' वही
फिर उस बन्धन में ''प्यार''मिले जरुरी तो नहीं.....
क्यू रिश्ता हमारा इतना ''अजीब'' होता है.....
क्या बस यही बेटियों का ''नसीब'' होता है.....
क्या बस यही बेटियों का ''नसीब'' होता है.....
आपकी राजदुलारी बिटिया

सुनीता देवी
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 – 522

कुदरत

हर शख्स इस शहर में परेशान सा है
इन मकानों में उसका मकान कौन सा है!
यह रास्ते जो इस शहर से दूर ले जाते हैं
वो भी तो उसे किसी और शहर में छोड़ जाते है!
पूछते हैं ये पंछी किसी बेहार फरिश्ते की तरह
इस जीवन पर कुदरत का निशान कौन सा है!
वो तो शुक है इतनी ऊंचाई तक इन्सान के हाथ नहीं पंहुचते हैं
वरना खुदा भी पूछता मेरा आसमान कौन सा है!
मैंने तो बनाई थी यह दुनिया पानी, मिटटी, पत्थर और हवाओं से
ये कंकीट, कारखानों और काले धुंए का कब्रिस्तान कौन सा है!
"ठाकुर" अपनी खिडकी में बैठा–बैठा अक्सर ये सोचता है
इन मकानों के बीच बचा ये अकेला पेड़ कौन सा है।

मीनाक्षी गुलेरिया
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर, रोल न0 – 805

मेरी जिन्दगी

जमीं पर आया था, मासूम बनकर।
आंखे खोली जिस्म का, जनून मानकर।।
गिर–गिर कर चलता था, धीमी थी चाल।
आंचल में था मां के, नाम दिया यशपाल।।
स्कूल गया, बचपन की यादें बाकी थी।
खेलना था, पर हाथों में किताबें काफी थी।।
सिलसिलों का नजारा बदल गया।
इस पंछी का तो किनारा बदल गया।।
ख्वाइशों के आगे बदले सारे सिलसिले।
कुछ गुरु, तो कुछ दोस्त भी मिले।।
तमन्ना थी, कि कोई दिल के करीब हो।
बात करने में शर्माता था, तो मोहब्बत कैसे नसीब हो।।
10 वीं हो गई, +2 में पहुंच गया।
दर्द–ए–दिल हासिल, जब उनसे प्यार हो गया।।
मासूम आंखे, होंठो पे मुस्कान, लब्जों मेंउसके खामोशी।
कैसे जताता उसे, कभी समझी न वो मेरे इश्क की मदहोशी।।
नई उम्मीद, नए ख्वाब, लेकर नए सपने।
गया अम्ब कालेज जहां कोई नहीं थी अपने।।
कुछ दिनों में मन लगा, कुछ दिनों में किसी के साथ हिला।
न मिल पाई वो मोहब्बत, टूट गई फिर से महफिल।।
लाजमी दरमिया, ऊना की वो गरमियां
लोंगो की तो छोड़िये गलियों से भी हुआ नहीं था रिश्ता।
माईग्रेशन करके नए कालेज आना पड़ा, कुछ ऐसा था यह किस्सा।।
फिर नई जगह, नई बहार, नई वसन्त आई थी।
पहली बार जब उनसे नजरें मिली, तभी वो पसन्द आई थी।।
अहसास कभी उसे होने न दिया।
जिन्दगी में कुछ उतार–चढ़ाव जरुर आए।
पर यह दिल कभी कंही खोने न दिया।।
सिर्फ सही वक्त का इन्तजार किया, इन्तजार किया।
पर वक्त ने खुद कह दिया, कि तुमने कुछ ज्यादा ही इन्तजार कर लिया।।
पल भर में उन पुरानी यादों का लौट आना।
अब न जाने किस–किस को कर देगा बेगाना।।

यशपाल शर्मा
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर, रोल न0 – 644

"कोशिश करने वालों की"

लहरों से डर कर नौका पार नही होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती।
नन्ही चीटी जब दाना लेकर चलती है,
चढती दीवारो पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नही होती।
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नही सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नही होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती।

कोमल
बी० ए० छठा सैमेस्टर

बचपन

नन्हा प्यारा सा यह बचपन।
जीवन का एक टुकड़ा बचपन।।
नटखट नादानी का बचपन
विदया में जो डूबा तनमन।।
खेलकूद में गुजरा बचपन,
याद दिलाता है प्रति क्षण।।
रंग – रंगीली दुनिया में,
बीता है सुन्दर – सा बचपन।।

सूरज
बी० ए० छठा सैमेस्टर

बेटियां

जानता नही था, होता है क्या अन्तर एक बेटे और बेटी का।
कारण.....
कभी सोचा ही नही नही, समझा भी नही, अन्तर भी होता है कोई।
हां जब से जाना है जमाने से, और जितना जाना है, कि होता है कोई फर्क,
तो करता हूं बहुत फक्कर, अपने पर, अपनी बेटियों पर,
और उससे भी ज्यादा उस पर, जिसने उन्हें दिया है जन्म।

क्यांकि बेटियां, कभी भी, कहीं भी, कैसे भी, दूर जरुर जाती है,
पर कभी छोड़ कर नहीं जाती.....

पुनीत
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर

वो औरत है वो नारी है।।

यह मां भी है, बेटी भी है, बहन भी है किसी की,
बड़े शौक से सजती हुई दुल्हन भी है किसी की।
कोई पूजता है कोई चाहता, कोई अदब से पुकारता है,
कोई कोसता है, कोई तोड़ता, कोई राक्षसी सा प्रताड़ता।
कोई इश्क की मूरत बना कर, घर में अपने जोड़ता,
कोई कुछ पलों का भोग कर के बेदिली से छोड़ता।
बरसों पुराने घर को अपने छोड़ने की रीत है,
पर क्यों इसके हिस्से में बिरह का गीत है।
यह प्यार है, दुलार है, यह जिन्दगी का श्रृंगार है,
ममता भरे हाथों में फिर क्यों बस दुखों का घर है।
क्यों कुछ नहीं कहती हो तुम, क्यों सबसे यूं सहती हो,
तुम में भी तो कुछ जान है, अपनी भी इक पहचान है।
तुमसे है जग यह जान लो, बड़ी कीमती हो मान लो,
तुम बिन यहां सब व्यर्थ है, तुम हो तो सब में अर्थ है।

अखिल
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर

हाय रे परीक्षा

जिस नाम को सुनने से कांपता है हर बच्चा,
वो है परीक्षा।
परीक्षा का पेपर हाथ में आते ही,
इतना डर लगता है,
कि अच्छा नहीं किया,
तो घर पर पिटना पक्का है।
3 घंटे में करने होते हैं लगभग 40 सवाल,
एक भी छूटा,
तो घर पर होता है बवाल।
रिजल्ट के एक दिन पहले,
रात को नींद नहीं आती है,
अच्छे नम्बर पाने के लिए,
भगवान की याद आती है।
अच्छे नम्बर पाने के लिए,
भगवान की याद आती है।
रखते हैं विधार्थी भगवान का व्रत,
अगर फेल हुए तो लगता है होगा
''डण्डे से नृत्य''।
पास होने पर मिलता है,
शानदार इनाम,
और मुख से निकलता है,
''थैंक्यू भगवान''
फिर आती है अगली कक्षा,
तब भी मुख से निकलता है,
''हाय रे परीक्षा''।।

अविनाश
बी० ए० छठा सैमेस्टर

जंग और नहीं

जंग तो आखिर जंग है, इधर है या उधर है
ढेर हैं लाशों के, नजर पड़े जिधर है
मत मना जश्न, दुश्मन की मौत पे
वो भी तो इन्सान है
कर रहम उन मासूम रिश्तों पे ,
जुड़े दुश्मन संग जिनके अरमान है
किसी की राखी किसी का सिंदूर
आज पहुचां शमशान है
देश के हालत अपनी दुनियां की
नीली छतरी वाला परेशान है।

विशाल
बी० ए० छठा सैमेस्टर

व्यंग्य :- यहां हर कोई परेशान है

संसार में सभी परेशान हैं। आप किसी से उसकी परेशानी के बारे में पूछकर तो देखो। उसकी परेशानियों के बारे में सुनकर आप भी परेशान हो जाओगे। अपने आसपास नजर घुमाओ तो पता चलता है यहां हर कोई परेशान है। इस संसार में कोई पानी के लिए तड़प रहा है तो कोई पानी से परेशान है।

कोई खा–खाकर इतना मोटा हो गया है कि अपना वजन घटाने के लिए पार्क तक की खाक छान रहा है। कोई अपना वजन बढ़ाने के लिए प्रोटीन पाउडर का डिब्बा खरीदने के लिए परेशान है बच्चे माता–पिता से और माता–पिता बच्चों से परेशान है। कोई स्कूल कालेज में प्रवेश लेने के लिए परेशान है तो कोई नौकरी के लिए फार्म भर भर कर परेशान है।

जिसका विवाह हो गया है वह पत्नी या पति से परेशान है। जिसका विवाह नहीं हुआ है वह विवाह न होने के कारण परेशान है। चिकित्सालय में रोगी इलाज करवाने के लिए परेशान है, तो दवा दुकानदार दवा बेचने के लिए परेशान है। मालिक नौकर से तथा नौकर मालिक से परेशान है।

पहलवान इसलिए परेशान है कि उसे अपनी ताकत दिखाने का मौका नहीं मिल रहा है। कमजोर इसलिए परेशान हैकि वह आवश्यकता पड़ने पर अपनी सुरक्षा भी नहीं कर सकता है। वास्तव में परेशानी वह सर्वव्यापक भाव हैजिससे कोई बच नहीं सकता। अतः हमें परेशानियों से परेशान न होकर उन्हे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

दीक्षा
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 – 802

अनमोल वचन

1. प्रार्थना तभी प्रार्थना है जब वह हृदय से निकलती है।
2. ध्यान से अच्छे गुण नहीं मिलते, ध्यान अच्छे गुणों से मिलता है।
3. असफलताओं से न घबराकर लगातार प्रयत्न करने वाले मनुष्यों की गोद में सफलता स्वयं आकर बैठ जाती है।
4. प्रतिष्ठा बनाने में कई वर्ष लग जाते हैं परन्तु कलंक एक क्षण में लग जाता है।
5. संसार में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है कि अपनी आवश्यकताओं को कम से कम रखे।
6. मनुष्य को अपनी मंजिल पर पहुंचकर ही आराम करना चाहिए।
7. दुःखों से दुःखी नहीं होना चाहिएबल्कि दुःखों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।
8. दुःख बांटने से आधा हो जाता है और सुख बांटने से दोगुना हो जाता है।
9. जीवन एक शतरंज के खेल की तरह है जिसमें कभी कभी एक कदम आगे बढ़ने के लिए एक कदम पीछे भी हटना पड़ता है।
10. किसी को दुःख देकर हम कभी भी प्रसन्न नहीं रह सकते।

पूजा
बी0 ए0 चतुर्थ सैमेस्टर
रोल न0 –

बेलन

एक बहू हाथ मे बेलन संभाले ससुराल पहुंची।
सास ने देखा तो बात पूछी
बहू बेलन ही लाना था तो चांदी का लाती।
सबसे पहले अपनी सास पर बजाती।
उधर से ससुर ने टोका और कहा
नहीं बहू बेलन चांदी का नहीं सोने का लाना था।
सबसे पहले अपने ससुर पर बजाना था।
माफ करना पिता जी मैं पहली बार ससुराल आई हूं।
इसलिए यह काठ का बेलन,
आपके काठ के उल्लू के लिए लाई हूं।

प्रतिभा
बी0 ए0 चतुर्थ सैमेस्टर

जिन्दगी और मौत

जिन्दा थे तो किसी ने पास भी बिठाया नहीं
अब खुद मेरे चारों ओर बैठे जा रहे हैं।
पहले कभी किसी ने मेरा हाल भी न पूछा
अब सभी आंसू बहाए जा रहे हैं।
एक रुमाल भी भेंट न किया जब हम जिन्दा थे
अब शालें और कपड़े उपर से ओढ़ाए जा रहे हैं।
सब को पता है कि अब इसके काम के नहीं मगर
फिर भी बेचारे दुनियादारी निभाये जा रहे हैं।
कभी किसी ने एक वक्त का खाना नहीं खिलाया
अब देशी घी मेरे मुंह में डाले जा रहे हैं।
जिन्दगी में एक कदम भी साथ न चल सका कोई
अब फूलों से सजा कर कन्धे पे उठाये जा रहे हैं।
आज पता चला कि मौत जिन्दगी में कितनी
बेहतर है हम बेवजह की जिन्दगी की चाहत किए
जा रहे हैं।

रोजी
बी0 एस सी दूसरा सैमेस्टर

गुनगुनी धूप

प्यारी धूप, गुनगुनी धूप,
कितनी अच्छी लगती धूप।
सूरज दादा के रथ पर चढ़,
धरती बीच उतरती धूप।
सर्दी से राहत दिलवाती,
सबके तन मन को सहलाती।
जाड़े के मौसम में सबके,
मन को है खुश करती धूप।

अक्षित
बी0 काम छठा सैमेस्टर

तुम आए न मगर

हर शाम तेरी यादों का लगता पहरा,
खामोशियों से खेलती धड़कनो को भी
जैसे ख्याल है तेरा।
हर मोड़ पर दिल तुझे ढूंढता फिरता,
पर हर आहट पर हमेशा कोई और मिलता,
शाम से रात आई, तुम न आए मगर
यादो का पहरा हुआ और घनेरा
हर रात मेरे पास होती सिसकियां
सवालों का संमदर,
फिर भी खामोशियां आखें नम भी हुई
तुम न आए मगर
तन्हाईयों ने अपनी बाहों में घेरा
हर बार चांदनी में डूबा
चांद तारों की बारात होती
मेरे दिल में इन्तजार का चिराग
और मिलन की सौगात होती
रात ढल भी गई,
तुम न आए मगर
मेरी आंखो में रह गया दूर तक अंधेरा
बेचैन अंधेरा स्याह अंधेरा

शुभम
बी0 काम छठा सैमेस्टर

मोबाईल

मोबाईल, मोबाईल, मोबाईल, मोबाईल
क्या है ये मोबाईल यह विज्ञान की खोज निकाली जिसने
दुनिया बदल डाली हर कोई चाहे इसे रखना पास।
बजे न घंटी तो रहे मन उदास नए-नए मैसेज नए-नए गाने।
इसमे अलग-अलग धुनों के तराने।
Sony, Nokia,Samsung, Moto
जब चाहे इसमें खींचो फोटो।
नए-नए चुटकले इसमे आएं।
जिन्हे पढ़ कर सब लोट-पोट हो जाएं।
जब किसी मुसीबत में फंस जाएं,
तो इसका सेफटी अलार्म बजाएं।
इस बात को मन में बिठाए स्कूल इसे लेकर न जाए।
विज्ञान की इस खोज का करें सम्मान,
अनावश्यक प्रयोग न करें इसका अपमान।

गौरव
बी0 एस सी दूसरा सैमेस्टर

Red Ribbon Club के सदस्य AIDS जागरूकता पर प्रदर्शनी प्रस्तुत करते हुए

NSS के सात दिवसीय शिविर के दौरान स्वयं सेवियों ने प्रजापिता ब्रह्मकुमारी राजयोग केन्द्र में जाकर राजयोग की जानकारी लेते हुए B.K. राखी ईचार्ज राजयोग केन्द्र स्वयं सेवियों के साथ

वार्षिक पारितोषिक पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्यातिथि श्री अर्जुन ठाकुर माननीय विधायक दीप प्रज्जवलित करते हुए।

वार्षिक पारितोषिक पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान देशभक्ति नृत्य की झलक प्रस्तुत करती छात्राएं

Red Ribbon Club द्वारा आयोजित AIDS जागरूकता रैली निकालते महाविद्यालय के छात्र व छात्राएं

राजकीय महाविद्यालय हरिपुर के प्रवक्ता श्री अजय कुमार (अर्थशास्त्र) विभाग महाविद्यालय नगरोटा सूरियां NSS स्वयं सेवियों से रूबरू होते हुए।

पुरस्कार वितरन समारोह में छात्रा कोमल मुख्यातिथि से पुरस्कार प्राप्त करते

वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता के मुख्यातिथि मेजर (डा.) एस के चावला का
स्वागत करते प्राचार्य व अन्य

वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह के
मुख्यातिथि माननीय विधायक श्री अर्जुन ठाकुर
का गर्मजोशी से स्वागत करते
प्राचार्य श्री हरबंस लाल धीमान

वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में
मचासीन जिलापरिषद सदस्य श्री पवन धीमान
व के सी सी बी बैंक नगरोटा सूरियां
के प्रबन्धक श्री विनोद चौधरी ।

National Service Scheme के सात दिवसीय शिविर के दौरान महाविद्यालय प्राचार्य Dr. H.L. Dhiman व छात्र एवं छात्राएं सामूहिक चित्र में

सात दिवसीय NSS शिविर में कार्य करते हुए स्वयं सेवी

NSS स्वयंसेवी महाविद्यालय के नई परिसर को साफ करते हुए।

सात दिवसीय NSS शिविर में आयुर्वेदिक डा. गुरदीप स्वयंसेवियों को सम्बोधित करते हुए।

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान नाटी प्रस्तुत करते छात्र व

वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता में दौड़ लगाती धाविकाएं

हलदूण

पहाड़ी
अनुभाग
सत्र 2018–19

प्राध्यापक सम्पादक
एच.एल. धीमान

छात्र सम्पादक
निशांत चौधरी

सम्पादकीय

मेरे प्यारे साथियो,

मिजो अपणे कालेज दी पत्रिका ''हलदूण'' दे पहाड़ी विभाग दा सम्पादन करदे बड़ी खुशी होआदी। मैं अपणे जो भाग्यशाली समझदा की मेकी ए मौका मिलेया। दोस्तो ए इक ऐसा मंच है जित्थू सांझो अपणे विचार प्रकट करने दा मौका मिलदा। पहाड़ी भाषा तां साड़ी अपणी भाषा है कनै साड़ी पछाण है, पर हौली–हौली साड़ी ऐ पछाण धुंधली लगी पेई होणा। असां पता नी कजो इसा जो लिखणे बालणे दी शर्म समझणा लग्गे। दोस्तों जिंया असां अपणी मां कन्ने प्यार करदे तियां पहाड़ी भाषा भी साडी मां है, इसा लिखण बोलणे दी बड़ी शर्म मत करा। तां दोस्तों गर्व करा अपणिया इसा भाषा पर कनै चुक्का कलम, लिखा कुछ विचार, देआ सम्मान अपणिया पहाडी भाषा जो।

मैं सारे विद्यार्थियां दा धन्यवाद करदा जिन्हां अपणे लेख पत्रिका च छपणें जो दित्ते, मैं अपणे अध्यापकां दा भी धन्यवाद करदा जिन्हा मिंजो इस लायक समझेया की मैं ऐ जिम्मेदारी लेई सकां।

निशान्त चौधरी
बी0 ए0 तृतीय
छात्र सम्पादक, पहाड़ी अनुभाग

पहाड़ी जोक्स

इक बारी इक शराबी बोलदा – जे मेरे हथे विच सरकार हुंदी ता मैं देशे दी तकदीर बदली देनी थी। ए सुनी के उसदी घरवाली बोलदी – कंजरा पैहले आपना पाजामा ता पाई लै – भ्यागा ते मेरी सलवार पाई फिरदा.......

इक बारी इक सेठे दी भैंस चोरी होई जांदी ता सै अपने नौकरा जो गलांदा पुलिस चौकिया जाई कने रिपोर्ट लिखईया, अधि रात थी तारे चमकना लगेयो थे ! कुते भौंकना लगेयो थे। चोर आए दीवार तोड़ी कने भैंसा जो लई गे। नौकर भी दौड़ी कने जांदा सै पुलिस चौकिया पुजदा तां उसजो कुछ भी याद नी रैंदा सै – रिपोर्ट लिखांदा की अधि रात थी तारे चमकणा लगेयो थे, कुत्ते भौंकणा लगेयो थे। चोर आए कने भैंसा जो तोड़ी कने दीवारा जो लेई गे।

अखिल कुमार
बी0 ए0 फाइनल
रोल न0 – 530

गपशप – बुद्धू कने तीसरे नामा दी परेशानी

इक सीधा–साधा पहाड़ी था इसदा नाम था बुद्धू सारे तिसजो छेड़दे रहदे थे भई बुद्धू भी कोई नां हा, तू कुछ होर ढंगा दा नां रख बुद्धू तिना दे ताणया ते परेशान होई गया।
इक दिन सै चली पेया ढेंगा दे नाओं दी तलाशा पर, पहले तिसजो इक मुर्दयात्रा मिली गयी, तिन्ने पुछंया कुण मरी गया, लोके बोल्या भई मरने वाले दा नां था अमरचंद सै अगे चलदा रिया।
अगे तिसजो इक झाड़ू दिंदी जनानी मिली तिन्ने नाम पूछया ता तिस्से बोलया लक्ष्मी सै होर आगे गिया ता तिसजो इक भिखारी मिलया तिसदा नां था धनपतराय अब बुद्धू जो अपणा जबाब मिली गेया।
हुण कोई तिसजो नावां दा ताणा देंदा ता सै जबाब देंदा।
अमर चन्द सै मरी गिया,
झाड़ू मारे लक्ष्मी,
धनपतराय लगिरा मंगणा भीक,
मेरा नां भाईयो बुद्धू ए ठीक!

शिल्पा
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 – 613

हिमाचली चुटकले

1. हिमाचली चाचु - क्या करदा बो मुनु तू
   मुंडू - Engineering करदा चाचु
   चाचु - से कया हुंदी
   मुंडू - ईमारता कने मकान बनाना सिखादा अड़यो
   चाचु - माईऔया इयां बोल न भई मिस्त्री है तु

2. जेड़ी जे कदी हर टाइम साथ देने दा वादा करदी थी
   कने जीणे मरने दियां कसमा खांदी थी।
   अज जालू कणका वडणे दा टाईम आया तां फोन स्विच आफ करी तेया

3. ट्रैफिक पुलिस आला मामू : गैडम आप के लाइसेंस पे आपकी फोटो ही नहीं है।
   # पहाड़न छोकरी हां बो मैंने देख के डिलीट कर दी, प्राइवेसी लगाने की आप्शन नहीं थी क्यूंकी और नहीं तो मिसयूज हो सकता है न
   मामू : ओ मेरिये नानिये तू चलान भी रहेना दी सो रुपया मिंजो ते ही लेई ले कने जा एथू ते माहो।

4. हिमाचली मुंडू चार पैग लगाणे बाद दो # डायलाग !!
   1. हुण दस कुण बंदी पूछनी!
   2. दस मिंजो कुण बंदा डिसणा!!

5. छोरी :- कितु आ मरुदा ??
   छोरा:- हस्पताल में हूं एक कार आला टक्कर मारिगया!
   छोरी :- अच्छा छुट्टी कालि मिलनी ??
   छोरा :- दो दिन लगने!
   छोरी :- ठीक है ! दो दिन बाद छुट्टी मिलदे ए मेरा रिचार्ज कराई दिए! नहीं सो दोबारा हस्पताल पुजायि देना..!!

6. इक बरी मक्खी कने मच्छरे दा बयाह बड़ी धुमधाम ने होया अगले दिन मखिया दा भाऊ आया तिनी पुछेया कि जीजे दे क्या हाल हन बोली.....
   अरा भाऊ क्या दसना राती मच्छर ज्यादा था ता में All out ओन कीती कने तेरा जीजा मरी गया।

7. कुड़ी बड़े प्यारे ने मुंडू दे सीने पर अपणा सिर रखी के बोल्दी जानु तुआडा दिल बड़ा कुरकुरा ऐ
   मुंडू : ओ मिए दिल कुरकुरा नी ऐ जेवां च बीड़ियां दा बण्डल ऐ रखेया, पनी मत दिन्दी अड़िए !!

विशाल
बी० ए० छठा सैमेस्टर
रोल न० – 633

कुड़ी मुंडये दा रिश्ता कने अंग्रेजी ???

इक बारी इक मुंडु कुड़ी देखने गेया कने
तिसजो कुड़ी पसन्द आई गेई।
हुण दुहीं दे घरवाले तिन्हा जो अप्पू मज्हे गल
बात करने वास्ते लग कमरे मज्हे भेजी देन्दे
की चलो इन्हा दी इक दूजे कने जान–पहचान होई जाणी।
कमरे मज्हे जाइ कने मुंडु सोचणा लगया
कि कुड़िया जो अंग्रेजी बोली कने इम्प्रेस करु।
पर तिने सोच्या की इस्सा जो पहलें
पुछि ता लैंदा की इस्सा जो अग्रेंजी औंदी भी हाई की नी।
मुंडुः– जी अग्रेंजी चलगी ?
कुड़िः– (शरमाई कने) जी चली ता पोंणी पर सोडा हुंगा तां।

निशा
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 – 520

पहाड़ी आदमी और जहाज

इक बरी अमरीका विच एक जहाज च मौसम .खराब होई गिया जहाज लगा खाना
पुठे सिदे गोत्या
पायलट बोल्या : इटस इम्पांसिबल तो फलाई नाऊ, आय एम सारी आई कैन नोट फलाई
इट मोर ओवर रनीया देरा च एक बंदा बोल्या मैं चलान्दा तिनी लिया कने जहाजे जो ढेरा मटेरा
करी के पुजाई ता ओइया तिसदे बाद तिस्दी बड़ी सेवा होई।
बोल्या हे मैन, हाउ यू डीड इट ? इतने खराब मौसमें च भी जहाज कडी लेनदा
सेह बोल्या अरा भाऊ पहले मैं बस चलांदा था पालमपुर – भरमौर वाया जोत होई करी।

शिल्पा
बी0 ए0 छठा सैमेस्टर
रोल न0 – 705

पुरस्कार वितरन समारोह के दौरान मुयातिथि प्राचार्य व अन्य गणमन्य व्यक्तियों संग

मुख्यातिथि व अन्य अतिथिगन पुरस्कार वितरन समारोह के दौरान नृत्यगान का आनन्द लेते हुए

NSS के सात दिवसीय शिविर के दौरान NSS स्वयंसेवियों को सम्बोधित करते हुए NSS के कार्यक्रम अधिकारी नरेन्द्र शर्मा